आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:04-11-14

हम ब्राह्मण आत्माओं को पवित्रता और वैराग्यता की दो मुख्य धारणाये करा के, मनुष्य से देवता लायक बनाने वाले, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - इन आंखों से जो कुछ दिखाई देता है, इसे देखते हुए भी नहीं देखो, इनसे ममत्व निकाल दो क्योंकि इसे आग लगनी है.

इस ईश्वरीय विश्व-विधालय में पास विथ ऑनर होने के लिए हर ब्राह्मण बनी हुई आत्मा को दो मुख्य धारणाये अपने जीवन में करनी है - सम्पूर्ण पवित्र जीवन (सम्पूर्ण निर्विकारी जीवन) और सम्पूर्ण वैराग्य-पूर्ण ब्राह्मण जीवन. हम ब्राह्मण आत्माये यह दो धारणाये अच्छी तरह से पालन करें इसके लिए हमें दो बातें बताई जाती है - १. हमारा लक्ष्य है - लक्ष्मी-नारायण जैसा सर्व-गुण समप्पन, सोले कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवता बनना. देवी-देवता तो हमें सतयुग में बनना है लेकिन दैवी-गुणों को अभी ब्राह्मण जीवन में धारण करना हैं क्योंकि आत्मा ही गुण-संस्कार लेकर जाती हैं. २. इस कलयुगी, पुरानी दुनिया का विनाश होना हैं. सतयुग की स्थापना होने वाली है. यह सारे संसार के लिए युग परिवर्तन का समय हैं. नई दुनिया सतयुग में जाने के लिए, ब्राह्मणों को अपना बुद्धि-योग इस पुरानी दुनिया से निकाल नई सतयुगी दुनिया में लगाना हैं. इसलिए पुरानी दुनिया से सम्पूर्ण वैराग्य होना चाहिए.

बाबा की आज की मुरली से हमारी दो मुख्य धारणाओं को पक्का कराने के लिए निकाले गये कुछ महा-वाक्यों का मनन करेंगे.

सम्पूर्ण पवित्रता के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- जो बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं, वही बाप हम को पवित्र, शांत स्वरूप बनाते हैं. मुख्य बात है पवित्रता की.

- पवित्र दुनिया और अपवित्र दुनिया है. पवित्र दुनिया में एक भी विकार नहीं. अपवित्र दुनिया में पांच विकार है इसलिए कहा जाता है विकारी दुनिया. वह है निर्विकारी दुनिया.

- बाप कहते है एक काम विकार पर जीतो तो जगतजीत, नई दुनिया के मालिक बनेंगे.

- आत्मा तो नहीं मरती, आत्मा तो सदैव है ही. सिर्फ पुण्य आत्मा, पाप आत्मा बनती है. ५ विकारों से आत्मा कितनी गंदी बन पड़ती है. अभी बाबा आये है पापों से छुड़ाने. विकारों से ही सारा कैरेक्टर्स बिगड़ते है.

- इस समय तुम्हारी ईश्वरीय गवर्मेन्ट क्या करती है? आत्माओं को पावन बनाकर देवता बनाती है.

- यह पढ़ाई है पतित से पावन बनने की. आत्मा ही पतित बनती है. पतित से पावन बनाना, यह धंधा बाप ने तुम्हें सिखलाया है. पावन बनो तो पावन दुनिया में चलेंगे. आत्मा ही पावन बने तब तो स्वर्ग के लायक बने. यह ज्ञान तुम्हें इस संगम पर ही मिलता है जैसे कि पवित्र बनने का हथियार मिलता है. बाप को ही पतित-पावन गाया जाता है.

पुरानी दुनिया से वैराग्यता के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- वह है पावन दुनिया, यह है पतित दुनिया. राम-राज्य और रावण-राज्य है ना. समय पर ही दिन और रात गाये हुए भी है. ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात. दिन है सुख और रात है दुख. भक्ति में भटकने को रात कहा जाता है, ज्ञान से उजाला हो जाता हैं.

- इस दुनिया में हाहाकार क्यों है? क्योंकि सभी पाप आत्माये है. विकारी आत्माओं को ही असुर कहा जाता है. अभी तुम बच्चे समझते हो दुनिया में कोई काम की चीज नहीं. सब मनुष्य मात्र को आग लगनी है. जो कुछ इन आंखों से देखते हैं, सब को आग लगनी हैं. आत्मा को आग नहीं लगती. आत्मा तो जैसे इन्सयोर है.

- बाबा ने बच्चों को समझाया है, यह खेल है. आत्मा तो ५ तत्वों से ऊपर रहती हैं. ५ तत्वों से ही सारी दुनिया की सामग्री बनती है.

- वास्तव में दुनिया एक ही है. वह नई और पुरानी होती है. जैसे मनुष्य छोटे बच्चे से बड़े बन बूढ़े बनते है ऐसे ही दुनिया नई से पुरानी बनती हैं. अब यह दुनिया बिल्कुल ही जड़-जड़ीभूत अवस्था में हैं.

- यह भी समझाया है - ज्ञान, भक्ति और वैराग्य. ज्ञान और भक्ति आधा-आधा कल्प है फिर भक्ति के बाद है वैराग्य. अभी इस पतित दुनिया में नहीं रहना है कपड़े उतार अपने घर, शान्तिधाम जाना है.

- यह पुरानी दुनिया विनाश जरूर होनी है. बाप नई दुनिया स्थापन करते है. बाप अनेक बार नई दुनिया स्थापन करने आये है फिर नर्क का विनाश हो जाता है. नर्क कितना बड़ा है स्वर्ग कितना छोटा है. नई दुनिया में है एक धर्म. अनेक धर्मों का विनाश फिर ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना होती है.

ॐ शांति.